AA igyokuh Hktu AA

AA gueku tUe AA

॥ पहलवानी भजन ॥

॥ हनुमान जन्म ॥

प्रकाशक-श्रीकृष्ण पुस्तकालय, चौक, कानपुर-१

॥ बम्बई ॥

सन् १९७७ ई० । छापाखाना, कानपुर-१ [मू० १) रु०

पहलवानी भजन

हनुमान जन्म

(१) शिवशंकर अब करौ सहारा।

शिवशंकर अब करौ सहारा, मैं प्रभु दास तुम्हारा।
सम्बत् ११ सौ ८७ हनुमान का भजन बिचारा ॥१॥

शिवशंकर अब करौ सहारा।

जिला कानपुर नगर बसत, है बहु बिस्तार पसारा।
परगना भोगनीपूर कहावै मौजा कांधी बास हमारा ॥२॥

शिवशंकर अब करौ सहारा।

पीती ठाकुर रामबकस थे वोउ सुरलोक सिधारा।
रामलाल चाचा है मेरा, देबीदीन है पिता हमारा ॥३॥

शिवशंकर अब करौ सहारा।

सेवक जान दया अब कीजै, दीजहि बुद्धि अपारा।
'कमलदास' कहैं कर जोरे, करौ काज प्रभु सुफल हमारा॥४॥

(२) भस्मासुर कीन्हाँ तप भारी ।

भस्मासुर कीन्हां तप भारी, मगन भये त्रिपुरारी ।
बोले शम्भु मांग बर लीजै जो कछु इच्छा होय तुम्हारी।। १।।

भस्मासुर कीन्हां तप भारी ।

हाथ जोर भस्मासुर बोले, मानौ बात हमारी ।
खावहु शपथ आज केशवकी,तबमानैं हम सांच तुम्हारी।।२।।

भस्मासुर कीन्हां तप भारी ।

खाई शपथ शम्भू केशव की, मगन भये असुरारी ।
तब बर मांगो भस्मासुर ने, अपनाकर करदिया अंगारी।।३।।

भस्मासुर कीन्हां तप भारी ।

जिस पर हाथ धरे हम अपना भसम होंय नर नारी ।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे एवमस्तु बोले त्रिपुरारी ।।४।।

(३) दै बरदान शम्भु दुख पायो ।

जब बरदान दिया शंकर ने, असुर बहुत हरषाये ।
भस्मासुर गौरा के कारन,शंकर पर तब हाथ बढ़ायो ।।१।।

दै बरदान शम्भु दुख पायो ।

या गति देख भगे तब मंकर मनमें अति दुख पायो ।
आगे भगत जात शंकर जी पीछे से भस्मासुर धायो।।२।।

दै बरदान शम्भु दुख पायो ।

शिव दुख देख बिकल भये, सुर मुनि हाहाकार मचायो ।
तीन लोक में भगे फिरे हैं,कहूँ बचन को ठौर न पायो ।।३।।

दै बरदान शम्भु दुख पायो ।
अब ना बचन प्राण शिव सोचें हरि को ध्यान लगायो ।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे तब बैकुण्ठ सिधायो ॥ ४ ॥

(४) पारवती बने कृष्ण मुरारी ।

पारवती बने कृष्ण मुरारी दीनन के हितकारी ।
अन्तरयामी हाल जान के घेरी है तब गैल अंगारी ॥१॥
पारवती बने कृष्ण मुरारी ।
शिव को निकर जान प्रभु दीन्हों आयो असुर पिछारी ।
हाथ पकर बोले तब केशव क्यों मुड़िया के परे पिछारी॥२॥
पारवती बने कृष्ण मुरारी ।
पारवती है न नाम हमारो मानो बात हमारी ।
नाचौ नाच अंगारी मेरे तौ होवैं नारि तुम्हारी ॥ ३ ॥
पारवती बने कृष्ण मुरारी ।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे नचो अशुर दै तारी ।
जबहीं हाथ धरो सिर अपने भस्म भयो जर छारी ॥ ४ ॥

(५) शंकर को तब काम सताना ।

पारवती का भेष धरे जहां खड़े कृष्ण भगवाना ।
तिनसे कहन लगे तब शंकर पारवती दीजै रति दाना ॥१॥
शंकर को तब काम सताना ।
सुनके बचन कृष्ण तब बोले क्या शंकर बौराना ।

हम हैं द्वारिका बासी तुम्हरे खातिर बने जनाना ।। ३ ।।

शंकर को तब काम सताना ।

इतने बचन सुने केशव के तब शंकर सकुचाना ।
बोले शम्भु श्याम सुन लीजै कामदेव छाड़ो स्थाना ।।३।।

शंकर को तब काम सताना ।

जब केशव योगी इक लेकर शंकर बिन्दु भराना ।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे तब केशव ने बचन बखाना ।।४।।

(६) शंकर से बोले बनवारी ।

मुनी एक गौतम ऋषि कहिये तासु अहिल्या नारी ।
उसने श्राप दिया बेटी को जन्मोगी सुत-सुता तुम्हारी।।१।।

शंकर से बोले बनवारी ।

उस दिन से बन में तप करती है बन खण्ड मंझारी ।
वो अब श्राप करें हम पूरण चलौ बेगि त्रिपुरारी ।। २ ।।

शंकर से बोले बनवारी ।

इतनी सुन केशव चल दीन्हें संग श्री त्रिपुरारी ।
हाथ जोर कर तब शंकर ने केशव से गिरा उचारी ।। ३ ।।

शंकर से बोले बनवारी ।

काहे श्राप दिया माता ने सो सब कहो मुरारी ।
'कमलूदास' नगर कांधी के गौतम ऋषिकी कथा संचारी।।४।।

(७) केशव कथा कहत समुझाई ।

एक समय मन्त्री से सुरपति, कहन लगे मुसकाई ।
जैसी त्रिया मेरी सुन्दर अस, नाहीं कहूँ परै दिखलाई ॥१

केशव कहत कथा समुझाई ।

इतनी सुन तब मन्त्री बोले, सुनहु इन्द्र चित लाई ।
जैसी त्रिया है गौतम की, ऐसी ना कहुँ सुन्दरताई ॥२

केशव कहत कथा समुझाई ।

इतने बचन सुने सुरपति के, मनमें कुमति समाई ।
कैसे भोग करैं हम वासे, देव हमहिं तदबीर बताई ॥३

केशव कहत कथा समुझाई ।

गंगा में स्नान करन को, नित उठ गौतम जाई ।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे, शशि को सुरपति दिया पठाई॥४

(८) मुनि ढिग शशि मुरगा बन आये ।

मुनि ढिग शशि मुरगा बन आये, सुरपति ताहि पठाये ।
आधी रात को तब मुरगा ने, कुकुड़ूकूँ को शब्द सुनाये॥ १

मुनि ढिग शशि मुरगा बन आये ।

गौतम जानी भोर भयौ है, छल नाहीं लख पाये ।
मुनि ने पहिन खड़ाऊँ अपनी, जाय कमंडल तुरत उठाये ॥२

मुनि ढिग शशि मुरगा बन आये ।

गये स्नान करन को गौतम, इन्द्र वहां चल आये ।
जैसो रूप हतो गौतम को, तैसो सुरपति रूप बनाये ॥३

मुनि ढिग शशि मुरगा बन आये ।
जहां पर नारि अहिल्या बैठी, इन्द्र वहाँ पर आये ।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे,सुरपतिको छल जान न पाये ॥४

(९) गंगा में मुनि जाय नहायो ।
जब स्नान करे गौतम ने, गंगा बचन सुनायो ।
आधी रैन अबहीं चौकस है, किस पापी ने आय सतायो ॥ १
गंगा में मुनि जाय नहायो ।
ओढ़ौ श्राप हमारो पापी, तब गौतम घबड़ायो ।
बोले नाम हमारो गौतम, हाथ जोर कर शीश नवायो॥ २
गंगा में मुनि जाय नहायो ।
सेवक जान खास गौतम को गंगा बचन सुनायो ।
तेरे घरमें आज छल हुइगयो,नारीको कोई आय सतायो॥ ३
गंगा में मुनि जाय नहायो ।
इतनी सुन गौतम ऋषि भागे, दौरा-दौर मचायो ।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे, गौतम लौट कुटी पर आयो ॥४

(१०) गौतम लौट कुटी पर आये ।
गौतम लौट कुटी पर आये, जगत सुता को पाये ।
ले सुता घरहिं को आये, बेटी ने कछु भेद न पाये ॥ १
गौतम लौट कुटी पर आये ।
कान अवाज पड़ी सुरपति के, तब मन में घबड़ाये ।

करत बिचार कढ़हिं अब कैसे, तौलों मुनि भीतरको आये॥२॥

गौतम लौट कुटी पर आये।

खोल किमार धंसे मुनि भीतर, नारी मतो उपाये।
खड़ी अहिल्या भई किवाँर तन औ पीछे हैं इन्द्र छुपाये॥३॥

गौतम लौट कुटी पर आये।

यहि विधि निकर गये हैं सुरपति, मुनि ने पकड़ न पाये।
कमलूदास कहैं कर जोरे, तब गौतम ने श्राप सुनाये॥४॥

(११) गौतम ऋषि ने श्राप सुनायो।

इक भग के खातिर सुनौ इन्द्र तुम, अपना धर्म डिगायो।
भग हजार तेरे तन हुइहैं, ऐसो ऋषि ने श्राप सुनायो॥१॥

गौतम ऋषि ने श्राप सुनायो।

ऐरे बचन, सुने गौतम के, तब सुरपति पछितायो।
भग हजार सुरपति के हुइगये, करनी कोउसनेफलपायो॥२॥

गौतम ऋषि ने श्राप सुनायो।

जहं पर नारि अहिल्या ठाढ़ी, गौतम श्राप सुनायो।
हुइजा शिला अहिल्या रानी, तूने अपना धर्म गमायो॥३॥

गौतम ऋषि ने श्राप सुनायो।

होन पाषाण लगी जब नारी, मन में क्रोध बढ़ायो।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे, तब बेटी को श्राप सुनायो॥४॥

(१२) माता श्राप दियो खिसिआय के।

हमको सुता शिला करवायो, झूठो दोष लगाय के।
कुंवारे पुत्र तुम्हारे हुइहै, सुन बेटी चितलाय के ॥१॥

माता श्राप दियो खिसिआय के।

हुइ गई शिला अहिल्या नारी, तब अंजनी घबड़ाय के।
संग सहेली लै राजन की, पहुँची है बन में जाय के २ ॥

माता श्राप दियो खिसिआय के।

आसन मार अंजनी बैठी, हरि को ध्यान लगाय के।
चारो दिशि से मढ़ी चुनाई, उसने सूराक रखाय के ३ ॥

माता श्राप दियो खिसिआय के।

'कमलूदास' कहै कर जोरे, भजन सभा में गाय के।
इतनी कथा कहत शंकर से, पहुंच गये केशव तहाँ जाय के ४॥

(१३) बन में सुता करत तप भारी।

इक सूराक सिर्फ है छोटो, चौंदिशि मढ़ी सम्भारी।
उसमें बैठी सुता अंजनी, देख सकहिं न कोइ नर नारी १॥

बन में सुता करत तप भारी।

बोले शम्भु कौन मढ़िया में, काहे करौ तप भारी।
गुरू तुम्हारे कौन बताओ, इतनी सुन बोली सुकुमारी २ ॥

बन में सुता करत तप भारी।

नाम अंजनी मेरा कहियो, मात अहिल्या नारी।
यहाँ हमारा कोई नहीं है, हम गौतम की बाल कुमारी ४ ॥

बनमें सुता करत तप भारी।

बोले शम्भु लेव गुरु दिक्षा मानों बात हमारी।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे हुइहै मंशा सुफल तुम्हारी ॥ ४

(१४) कैसे लें गुरु दिक्षा तुम्हारी।

कैसे लें गुरु दिक्षा तुम्हारी मानो बात हमारी।
कुंवारे पुत्र हमारे हुइहैं हमैं श्राप दीन्हां महतारी ॥ १

कैसे लें गुरु दिक्षा तुम्हारी।

उसी दिन से हमने प्रण कीन्हाँ दीन्हाँ भवन बिसारी।
सुर नर मुनि हम देख सकहिं ना तब शंकरने युक्ति बिचारी॥

कैसे लें गुरु दिक्षा तुम्हारी।

कान में पोंगी कर सुराक से फूंकौ बिन्दु त्रिपुरारी।
कही शम्भु तेरे सुत हुइहैं महाबीर योद्धा बलधारी ॥ ३

कैसे लें गुरु दिक्षा तुम्हारी।

इतने बचन सुने शंकर के तब भइ सुता दुखारी।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे, होनहार सो टरै न टारी ४ ॥

(१५) करत बिलाप अंजनी भारी।

करत बिलाप अंजनी भारी, बिलखत कहत पुकारी।
कुंवारे पुत्र हमारे हुइहैं, यो पातक लागो मोहिं भारी १ ॥

करत बिलाप अंजनी भारी।

कैसे मुक्ख दिखइहैं, जग में, हंसिहैं सब नर नारी।

जीतहिं मरणभयो अब मेरो ये विधना दीन्हां दुखभारी।।२

करत बिलाप अंजनी भारी।
बोलें शम्भु सुता धीरज धर मानों बात हमारी।
होवे पुत्र सुता जब तेरे वो दीजो बन में तुम डारी ३ ।।

करत बिलाप अंजनी भारी।
शम्भु गये कैलाश पुरी को गये बैकुण्ठ मुरारी।
कमलूदास, नगर कांधी में,कीन्हीं कलम भजन पै जारी ।।४

(१६) बन में जन्म लिया बलधारी।
जायो पुत्र अंजनी ने जब जन्म लिया बलधारी।
मठिया फाट गई आपहि से, तब चल भई ऋषिराज दुलारी।।

बन में जन्म लिया बलधारी।
आंबर बेल पुत्र को लेकर रैन हती अंधियारी।
बन में पड़ जहां ऊमर को, सुत को डार चली महतारी २ ।।

बन में जन्म लिया बलधारी।
बोला पुत्र काह हम खइहैं, तब बोली सुकुमारी।
लाल २ जो तुम्हें दिखाने, सो कर लीजो कुंवर अहारी ।।३

बन में जन्म लिया बलधारी।
बेटी लौट भवन में आई, हरि की लीला न्यारी।
'कमलूदास' कहैं कर जोरे,प्रात समय रवि किरन पसारी।।४

(१७) रवि को निगल लिया बलधारी ।

प्रात समय सूरज जब निकले, तब झपटे बलधारी ।
पकड़ सूर्यको मुखमें धर लओ, छायगई चौंदिश अंधियारी ।। १

रवि को निगल लिया बलधारी ।

हाहाकार मचा देवन में, सुर मुनि भये दुखारी ।
दिन की रैन भई जा कैसो, ब्याकुल भये फिरैं नर नारी ।। २

रवि को निगल लिया बलधारी ।

तेंतिस कोट देवता मिलके, ब्रम्हादिक त्रिपुरारी ।
सबनेबिनय जाय तब कीन्हीं, छोड़देव रविकुंवर हजारी ।। ३

रवि को निगल लिया बलधारी ।

त्राहि त्राहि शरणागत तेरी, सुनियो विनय हमारी ।
'कमलूदास' नगर कांधी के, निशवासर हैं शरन तुम्हारी ।। ४

(१८) सुत को सुरन दिया बरदाना ।

सुत को सुरन दिया बरदाना, नाम धरो हनुमाना ।
बोले बिष्णु छोड़ रवि दीजै, अजय अमर हुइहौ बलवाना ।। १

सुत को सुरन दिया बरदाना ।

ब्रम्हा कहा ब्रम्हचारी होइहौ, होइहौ गुणी निधाना ।
इन्द्र ने नाम धरो बजरंगी, महादेव महबीर बखाना ।। २

सुत को सुरन दिया बरदाना ।

बोलो पवन पवन-सुत हमसे बेग सदा तुम जाना ।
बोली अग्नि जलौ ना हमसे,जलने कही पार तुम जाना ॥३

सुत को सुरन दिया बरदाना ।

सुन के बिनय छोड़ रवि दीन्हा, देवन ने सुख माना ।
'कमलूदास कहैं कर जोरे, बोलो सब जय २ हनुमाना ॥४

❀ भजन हनुमान जन्म समाप्तम् ❀

दोहा-जिला कानपुर में बसै, मौजा कांधी बास ।
गोत्र तीन सौ साठ में, सेवक 'कमलूदास' ॥

॥ समाप्त ॥

बम्बई छापाखाना, कानपुर-१